ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 301-302

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

अंधा युग : मानवता का संरक्षक

विद्या कुमारी
सहायक शिक्षिका– हिन्दी, अनुग्रह मेमोरियल इन्टर कॉलेज, गया (बिहार), भारत

Received- 22.08.2020, Revised- 25.08.2020, Accepted - 27.08.2020 E-mail: - dr.ramanyadav@gmail.com

सारांश : ***मनुष्य की बर्बरता और युद्ध की भयावहता मानव मूल्यों को नष्ट ही नही बल्कि इतिहास के पन्नों को खून से लथपथ भी कर देता है । युद्ध पौराणिक हो या आधुनिक उसमें मानवता की हत्या ही हुई है। युद्ध की गाथा को अगर देखा जाय तो रामायण हो या महाभारत या फिर दोनो विश्व युद्ध, सब में मानवता की हत्या हुई है। इस युद्ध के केन्द्र में स्वार्थ, लोभ, काम, क्रोध न जाने कितने ही अनगिनत तत्त्व षामिल है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए आधुनिक काल के कवि, कथाकार, काव्यनाटकार धर्मवीर भारती ने काव्यनाटक 'अंधा युग' लिखा है, जिसमे उन्होने मानवता की हत्या होते हुए दिखाया है। तॉकि भविष्य में इस तरह से मनावता की हत्या न हो सके अंधा युग का प्रकाशन 1995 ई0 में हुआ था। यह रचना अर्द्धषती पूरा कर चुकी है। अबतक की रचनाओं में हिन्दी की यह एकमात्र काव्य नाटक है जो पठन और मंचन की दृष्टि से पूर्ण सफल है, केवल यह हिन्दी में ही नही अपितु हिन्दीत्तर अन्य भाषाओं में भी अनुवादित और मंचित हुआ है। देश के अलावे जापान और मॉरिशस आदि जगहों में भी रंगमंच की दृष्टि से सराहनीय रहा है। आधुनिक हिन्दी नाटक के इतिहास में अंधा युग को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।***

कुंजीभूत शब्द– वैदिव्यमान, नक्षत्र, ज्ञानश्रयी, शाखा, अग्रगण्य, काव्य, क्रांतिकारी, पुरस्कर्ता, इतिहास, विचारक।

अंधा युग के संदर्भ में अखिलभारतीय सम्मान प्राप्त कन्नड के प्रसिद्ध के नाटककार गिरीश कनार्ड का कहना है कि "संस्कृत में शुद्रक के बाद आधुनिक युग में भारती का अंधा युग क्लासिक नाट्य–परंपरा का पहला महत्वपूर्ण नाटक है ।"1 इसकी सार्थकता का समर्थन करते हुए अंधा युग के प्रथम निर्देशक–प्रस्तुतकर्ता सत्यदेव दूबे ने कहा कि अंधा युग विश्व की दस सर्वश्रेष्ठ नाट्य–रचनाओं में गिना जाने योग्य एक उत्कृष्ट नाटक है। नेमिचन्द्र जैन ने इसके महत्व को रेखांकित करते हुए लिखा है कि– इसने पहली बार हिन्दी नाट्य में यह स्थापित किया है कि काव्य और नाटक का बडा गहरा संबंध है, बल्कि श्रेष्ठ नाट्य कृति काव्य का ही एक प्रकार है ।

अंधा युग को शिल्प और चेतना की सम्पूर्णता में विचार करने से पूर्व यह देखना उचित होगा कि किन बातों ने इस कृति को कालजयी बनाया। इस नाटक के कथा वस्तु का आधार महाभारत है। महाभारत और रामायण के संदर्भ में रामस्वरूप चतुर्वेदी हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास में लिखते है–"हमारे दो आदिकाव्य रामायण और महाभारत अपनी परिकल्पना में एक दूसरे के विरोधी है। एक आदर्श की चरम गाथा है तो दूसरा यथार्थ का नग्नरूप। कथा का मूल ढॉचा दोनो जगह भारतीय हिन्दु परिवार में भाईयों के आपसी संबंध पर टिका हुआ है। पर इन संबंधो की दिशा अलग–अलग है। रामायण में एक भाई दूसरे के लिए राजगद्दी छोड देता है, जबकि महाभारत के भाई एक दूसरे को सुई की नोंक बराबर जमीन भी नहीं देना चाहते है ।"2

इस काव्य नाटक में भारती जी" महाभारत के अठारहवें दिन की अमानवीयता का दस्तावेज प्रस्तुत नहीं करते अपितु युद्ध की समाप्ति अर्थात अठारवें दिन की संध्या से लेकर कुष्ण की मृत्यु तक की कालवधि का वर्णन किया है। वस्तुतः इस नाटक के माध्यम से युद्ध में होने वाले कुठाओं, अर्थ सत्यों, अंधी स्वार्थ परकता, विवेक शून्यता आदि के माध्यम से ज्योतित नाट्य है।"3

इस नाटक के कूल पांच अंक और सोलह प्रमुख पात्र है। नाटक में कौरव पक्ष के सभी योद्धा मारे जाते है। शेष कुछ पात्र रह जाते है जैसे–अश्वत्थामा, कृपाचार्य और कुतवर्मा। कहा जाता है कि यह युद्ध धर्म की स्थापना हेतु लडी गई थी। किन्तु धर्मवीर भारती गान्धारी के मुख से कहलवाते है–

"मैने यह बाहर का वस्तु–जगत अच्छी तरह जाना था
धर्मनीति, मर्यादा यह सब है केवल आडम्बर मात्र,
मैने यह बार–बार देखा था।"4

धर्मवीर भारती को एहसास हो गया है कि धर्मनीति, मर्यादा यह सब समाज के निरीह तत्व है। जिसकी व्याख्या और प्रभाव समाज को कमजोर बना रहा है।

नाटककार इस अंधकार में प्रकाश की तलाश

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

करते है । इस नाटक के कथ्य में इसका मुलमंत्र स्पष्ट हो जाता है–

"युद्धोपरांत यह अंधा युग अवतरित हुआ जिसमें स्थितियॉं, मनोवृतियॉं आत्माएँ सब विकृत हैं एक बहुत पतली डोरी मर्यादा की पर वह भी उलझी है दोनो के पक्षों में सिर्फ कृष्ण में साहस है सुलझाने का वह है भविष्य का रक्ष कवह है अनासक्त पर शेष अधितिर है अंधे पथ भ्रष्ट, आत्महारा, विचलित अपने अंतर की अंध–गुफाओं की वासी यह कथा उन्ही अंधो की है यह कथा ज्योति की है अंधो के माध्यम से।"5

महाभारत के युद्ध के बाद अंधा युग अवतरित हुआ था। वर्तमान समय को भी अंधा युग कहा जा सकता है। जहॉं आत्माएँ एवं मनोविवृतियॉं नष्ट हो चुकी है, स्थितियॉं विकृत हो गई है। केवल मर्यादा की पतली डोर शेष है। जो टुकडे–टुकडे हो बिखर चुकी है । अर्थात वर्तमान समय में भी मानवता और पशुता में कोई अंतर नहीं है। रचनाकार समाज के प्रति संवेदनशील होता है। भारती जी पूर्व जगत और पश्चिम जगत की स्थितियों से बहुत विक्षुब्ध थे। विश्वयुद्ध की घटना, देश विभाजन की त्रासदी आदि स्थिति भारती जी जैसे संवेदनशील रचनाकार को बेचैन कर रही थी और इसी कारण वे प्रेरित होकर अंधायुग की रचना करते है। इस रचना में उन्होने यह दिखलाने का प्रयास किया है कि यह संसार कितना अंधा हो गया है कि वह काम, क्रोध, मोह, लोभ, ईर्ष्या, द्वेष तो देख रहा है, पर सत्य, प्रेम, दया, क्षमा आदि मानवीय मूल्यों को नहीं देखता। भारती जी के शब्दों में ही कहेंतो यह ऐसा समय है जिसमें भय का अंधापन, ममता का अंधापन, अधिकारों का अंधापन जीत गया है जो कुछ सुन्दर था, शुभ था, कोमल था, वह हार गया है। स्पष्टतः भारती जी ने अंधायुग में अनुभुत की जाने वाली अंधत्व की चेतना को अभिव्यक्त किया है, हिंसा और रक्त पात है, संशय और संत्रास है, बावजुद इसके रचनाकार का उद्धेश्य केवल पराजय कुंठा और निराशा का चित्रण करना नही। कोई भी रचनाकर जो जिवन में आस्था रखता है अंधकार नहीं चाहता। वह अंधकार का इसलिए वर्णन करता है क्योंकि वह प्रकाश चाहता है। इसलिए भारती जी शुरूआत में ही कह देते है–

"यह कथा उन्ही अंधो की है या ज्योति की है अंधो के माध्यम से।"

इस नाटक की व्यंजनाऐं बहुत दूर तक जाती है और इसे विभिन्न स्तरों पर प्रासंगिक बनाती है। यह अंधकार के बीच प्रकाश की उस आकांक्षा का नाटक है जो प्रत्येक मानव मन में किसी न किसी रूप में रहेगी ही।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कसौटी 15वां अंकः संपादक नन्दकिशोर नवल, –पृ0–279
2. हिन्दीसाहित्य और संवेदना का विकास–रामस्वरूप चतुर्वेदी लोकभारती प्रकाशन 20वॉं संस्करण 2007, –पु0–16
3. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास–बच्चन सिंह, राधा कुष्ण प्रकाशन संस्करण–2006, –पृ0–463
4. अंधायुग– धर्मवीर भारती, किताब महल 42वॉं संस्करण 2020–पृ0–12
5. वही,–पृ0–0

*****